Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ माध्यन्दिनीयः

कर्मकाण्ड-मन्त्रसङ्ग्रहः

[प्रथमो भागः, सामान्याध्यायः]

रचयिता— पं० श्रीगोपालचन्द्रमिश्रः, काशी ।

जहांगीराबाद २०२३८४
बुलन्दशहर (उ०प्र०)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

समर्पणम्

त्यक्तपरिग्रहाणामपि कृतशास्त्रग्रहाणाम्, सर्वतन्त्रस्वतन्त्राणामपि तन्त्रपरतन्त्राणाम्, समङ्गीकृतकाषायाणामपि समुपासितपीताम्बराणाम्, परिहृतद्वेषाणामपि अज्ञानध्वान्त-विद्वेषिणाम्, पर्यस्तपरिजनानामपि परिवृतजनानाम्, विद्या-विद्वत्-तदनुरागि-जनकल्याणाशंसिनां, नैक-दुरूह-ग्रन्थिल-ग्रन्था-गूहन-क्षम-लेख-ललितानाम्, तर्ककर्कशधिषणाधावनभीषणानाम्, वैदिकमार्गप्रतिष्ठापनश्रद्धालूनाम्, दतियावनखण्डी-पीताम्बरापीठविहारिणाम्, अप्रकाशितात्मनामधेयानां, श्रद्धेयानां स्वामिपादानाम् अभ्युदयावह-सरसा-मोघ-पक्ष्मोत्क्षेपसम्पादनायायं माध्यन्दिनीयः कर्मकाण्डमन्त्रसंग्रहः करसरसीरुहेषु सश्रद्धमर्प्यते,

विनीतेन—

श्रीगोपालचन्द्रमिश्रेण

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

माध्यन्दिनीयः

कर्मकाण्डमन्त्रसङ्ग्रहः

[प्रथमो भागः, सामान्याध्यायः]

समुपयोगि-भूमिका-विनियोग-मन्त्र-सूच्यादिसहितः

प्रकाशकः—महनीयचरितः पं० श्रीरामनारायणवैद्यः झाँसी

ग्रन्थकर्ता—याज्ञिकवरेण्यः पं० श्रीगोपालचन्द्रमिश्रः

वेद-धर्मशास्त्र-मीमांसाचार्यः, एम० ए, प्राध्यापकः

काशी हिन्दू विश्वविद्यालयस्य

प० प्रेम दत्त शास्त्री
जहांगीराबाद २०२३१४
बुलन्दशहर (उ०प्र०)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

माध्यन्दिनीय-कर्मकाण्ड-मन्त्रसंग्रहस्य प्रथमो भागः सामान्याध्यायः, तस्य

विषयानुक्रमः

प्रकरणम्	मन्त्रसंख्या	पृष्ठसंख्या
१—समर्पणम् (मुखपृष्ठे)		
२—विषयानुक्रमः		२
३—दो शब्द (म० म० पं गिरिधरशर्मा चतुर्वेदी जी)		३
४—भूमिका (पं० श्री गोपालचन्द्र मिश्र जी)		४-८
५—विनियोगसूची (मन्त्र-संहितास्थल-पृष्ठ-निर्देशसहिता)		९-१६
१—स्वस्तिवाचनम्	१-१३ [१३]	१-६
२—देवपूजा	१४-५५ [४२]	७-२६
३—पुरुषसूक्तपूजानुवाकः	५६-७१ [१६]	२७-३२
(क) भोजनाध्यायः	५६-७७ [२२]	२७-३५
(ख) उत्तरनारायणमन्त्राः	७२-७७ [६]	३३-३५
४—रुद्रपूजानुवाकः	७८-९३ [१६]	३५-४१
५—नवग्रहमन्त्राः	९४-१०२ [९]	४१-४५
६—तिलक-वरण-रक्षाबन्धन-आशीर्वाद-मन्त्राः	१०३-१०८ [६]	४५-४८
७—श्रीसूक्तम् (देवीपूजामन्त्राः)	१०९-१२३ [१६]	४८-५१
८—पुस्तकपरिचयः		५१-५२

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दो शब्द

वर्तमान में स्मार्त कर्मकाण्ड के यथार्थ जानने वाले बहुत ही अल्प हो गये हैं। जो श्रद्धालु आस्तिक जन अपने यहाँ विधिपूर्वक परम्परानुसारी सस्वर वेदमन्त्रों के उच्चारण के साथ कर्मकाण्ड कराना चाहते हैं उन्हें उपनयन विवाह आदि संस्कार एवं श्राद्ध प्रतिष्ठा आदि विशेष कर्म कराने वाले भी बड़ी कठिनता से प्राप्त होते हैं। इससे भी वास्तविक कर्मकाण्ड का लोप-सा होता जारहा है। इस दुर्दशा को मिटाने के लिए श्रीवैद्यनाथ आयुर्वेद भवन के प्रतिष्ठापक और अध्यक्ष पं० श्रीरामनारायणजी वैद्य के हृदय में प्रेरणा हुई और कुछ विचार विमर्श हुआ, जिस के फलस्वरूप काशी, एवं मथुरा में अध्ययन-अध्यापन व्यवस्था के साथ तदुपयोगी पुस्तक प्रकाशन की धारणा हुई।

प्रारम्भिक दशा में जिन स्वस्तिवाचन देवपूजा आदि मन्त्रों का सर्वसाधारण के लिए विशेष उपयोग होता है अभी उनका यह सुन्दर संग्रह, विद्वान् उत्साही कर्मकाण्डी आचार्य पं० श्रीगोपालचन्द्र मिश्र प्राध्यापक काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से करवा कर मुद्रित किया जा रहा है।

आशा है इससे तथा भविष्य में प्रकाशित होने वाली पुस्तकों से वेद-कर्मकाण्ड-श्रद्धालु आस्तिक जनों को, विशेषतः पढने वाले, एवं कराने वाले सज्जनों को सस्वर वेदमन्त्र का अभ्यास करने में बहुत लाभ होगा, और इस योजना से कर्मकाण्ड की प्रवृत्ति सुरक्षित रहेगी, साथ ही उक्त पं० रामनारायणजी वैद्य इस सुयश के भागी, तथा श्रद्धालु आस्तिक जनता की कृतज्ञता एवं हार्दिक धन्यवाद के भाजन होंगें।

वाराणसी
नागपञ्चमी २०१९

गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी
[महामहोपाध्याय]

पं० प्रेम दत्त शास्त्री
जहांगीराबाद २०२३६४
बुलन्दशहर (उ०प्र०)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भूमिका

[कर्मकाण्ड और यह संग्रह]

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। समाज का जीवन क्रियाशीलता है। क्रिया या कर्म का मुख्य ध्येय आत्मसन्तोष होना है। आत्मा का वास्तविक बोध तत्वज्ञान से होता है। तत्वज्ञान की पूर्णता सत् चित् आनन्द की सर्वत्र व्यापकता का सार्वकालिक अनुभव है। तत्वज्ञानी होने पर मनुष्य सामाजिक रहते हुए भी लोकमुक्त है—इस अनुक्रम के परिशीलन में ही समाज के जीवन रूप से कर्मकाण्ड की महत्ता ज्ञात होती है।

इसमें सन्देह नहीं, कि भारतवर्ष में ऐसे अनेक तत्वज्ञानी हो चुके हैं जो आत्मा का अनुभव सर्वव्यापक रूप से करते थे। इसीलिए भारतीय संस्कृति में तत्वज्ञ महर्षियों के कर्मकाण्ड के विस्तृत विवेचन, महत्व तथा निर्देश उपलब्ध हैं। आत्मा का प्रकाश सर्वत्र रहते हुए भी शरीर की विशेषता से उसके (=आत्मा के) अनुभव के साधन विभिन्न प्रकार के हो जाते हैं—यही अधिकार का विचार है।

इस कर्मकाण्ड एवं अधिकार संबन्धी तत्वज्ञ महर्षियों की समझ का लोकोपकार के लिए स्मृतियों में विशेष रूप से वर्णन किया है।

खान से निकाला हुआ सोना या मणि अपनी सत्ता एवं मूल्य सुस्थिर रखता हुआ भी व्यावहारिक चमक या गौरव के लिए अनुरूप कर्मकाण्ड (=संस्कार या शोधन) की अपेक्षा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रखता है। इसी प्रकार प्रत्येक प्राणी अपने वास्तविक गौरव को व्यावहारिक जगत् में विकसित करने के लिए कर्मकाण्ड का आसरा लेता है। चाहे वह आधुनिक पाश्चात्य शिक्षा-आचार प्रभावित तर्कप्रिय मस्तिष्क की प्रत्यक्ष अनुमान की सीमा में हो, या श्रद्धाप्रधान आस्तिक तत्वजिज्ञासु की शास्त्र वचन की सीमा में हो, किसी न किसी रूप में कर्म की महत्ता सबको देनी ही पड़ती है। फलतः किसी भी मानव का या उसके मानसिक स्तर का मूल्याङ्कन कराने वाला समाजहित के उद्देश्य से या अपने हित को द्वार रखकर होने वाला शोधनात्मक या संस्कारात्मक कार्य [जैसे दूसरे के लिए सत्कार या त्याग (=देवपूजा), संयम या सेवा (=संगतिकरण) एवं दान के प्रकार की क्रिया] करना ही 'कर्मकाण्ड' है जो 'सहज यज्ञ' है। जिसका आश्रय सभी को कभी न कभी किसी न किसी तरह लेना ही पड़ता है।

बस—इसी रहस्य को मनुष्य जीवन के साथ दूध पानी की तरह एक रूपता देने के लिए तत्वज्ञ लोकहितैषी व्यक्तियों ने कर्मकाण्ड का विकास किया, समादर किया। इसलिए जिस देश में जितनी गहराई से विचार हुआ वहां उतना ही कर्मकाण्ड का व्यापक और ठोस रूप हुआ और उसे धर्म या संस्कृति के साथ जोड़ दिया गया। इसलिए कर्मकाण्ड एक यजमान अर्थात्—व्यक्ति मात्र के हित के लिए नहीं अपितु साक्षात् या परंपरया लोकहित के लिए है। हां—अपना हित, प्रवृत्ति का द्वार अवश्य है। साधारण बुद्धि मनुष्य--ऊंचे विचारों की महत्ता तब देता है जब उसकी मूल प्रवृत्तियाँ = जो जन्ममरण शीलतारूप मृत्युलोक की योनियों की साहजिक भोग क्षमता के रूप में विद्यमान है = की पूर्त्ति कर लेता है। अतः कर्मकाण्ड के मूल रहस्य (=आत्मानुभव) में अड़चन देनेवाले कुसंस्कारों (मल) को हटाकर मनःशुद्धिको बल देने की बात को छिपाकर (तुलना कीजिए या० स्मृ० १।८) साधारण स्तर के व्यक्तियों-जिनकी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

संख्या सर्वदा अत्यधिक रहती है--को प्रवृत्त करने के लिए कामना का प्रलोभन देकर कर्मकाण्ड किया कराया जाता है।

नित्य नैमित्तिक कर्मकाण्ड की भांति काम्य कर्मकाण्ड भी अधिकार सामर्थ्य रहते हुए फल प्राप्ति की प्रबल लालसा से नहीं किन्तु व्यावहारिक उपादेयतार्थ खाना पूरी के रूप में अर्थात् निष्काम भाव से किया जाता है तो उसकी लोककल्याणकारिता या लोकसंग्रह के कारण महत्ता अधिक है। पर यदि ऐसा निष्काम कर्म करना किसी से संभव नहीं हो तो भी शास्त्रानुसार कर्त्ता व्यक्ति को तो कर्मकाण्ड का फल मिलेगा ही साथ ही में इस धर्मानुष्ठान से लोकस्थिरता भी बनी रहती है। इसलिए किसी भी व्यक्ति को कभी भी कर्मकाण्ड की उपेक्षा नहीं करनी चाहिये, भले ही उसके फल की उपेक्षा हो जाय। जैसा कि यहां के उद्धृत कुछ वचनों से भी स्पष्ट होता है—

'कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥'—ईशावास्योपनिषद् २;
'धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा।'—तैत्तिरीयश्रुति;
'यज्ञदानतपःकर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत्।
यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम्।
एतान्यपि तु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा फलानि च।
कर्त्तव्यानीति मे पार्थ निश्चितं मतमुत्तमम्॥'—१८।५-६।
'यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः।'—गीता३।९;

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कर्मकाण्ड में मूलतः दो विभाग हैं—एक श्रौत, दूसरा स्मार्त। श्रौत कर्मकाण्ड का यथाविधि अहिताग्नि व्यक्ति ही अधिकारी है। आज धर्मप्राण भारतवर्ष में आहिताग्नियों का मिलना, होना असंभव सा हो गया है। जनसाधारण में स्मार्त कर्मकाण्ड की ही जानकारी, व्यवहार या आदर है।

कर्मकाण्ड कराने का अधिकार व्यवहारतः और शास्त्रतः ब्राह्मण जाति को है परन्तु जानकारी एवं मन्त्राभ्यास का अधिकार उपनीत त्रैवर्णिक मात्र को है। आज पण्डिताई वृत्ति करने वालों से अतिरिक्त ब्राह्मणों ने तथा क्षत्रिय वैश्यों ने आवश्यक कर्मकाण्ड की जानकारी भी छोड़ दी है।

आज किसी को इतना समय नहीं कि वह पूरी अपनी वेद की शाखा का अध्ययन कर सकें। यदि कुछ मन्त्राभ्यास या जानकारी की इच्छा हुई तो कोई ऐसा उपयोगी व्यवहार में अधिकतया काम आनेवाले कर्मकाण्ड के मन्त्रों का संग्रह उपलब्ध नहीं था जिससे इच्छा की पूर्ति की जा सके। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए उत्तर भारत में सर्वाधिक समादृत माध्यन्दिन शाखा के कर्मकाण्डोपयोगी मन्त्रों का यह संग्रह प्रस्तुत किया गया है।

इस संग्रह को कई भागों में उपयोगिता या कर्मकाण्डीय प्रवृत्ति का मनोवैज्ञानिक शैली से स्तर समझ कर पूरा करने का विचार किया गया है। अभी आपकी सेवा में 'सामान्याध्याय' नाम से प्रथम भाग उपस्थित किया गया है।

इसके विषयानुक्रम तथा विनियोग सूची से इसकी उपयोगिता का स्वभावतः अनुमान हो जायगा और विनियुक्त मन्त्रों का आधार 'स्मार्तपीयूष' [स्वतन्त्र पुस्तक] से ज्ञात हो जायगा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आशा है भारतीय वेदाधिकारी व्यक्ति इसका समादर करके अपनी और देश की संस्कृति रक्षा में अपेक्षित बल प्राप्त कर सकेंगें।

इस प्रकाशन में प्रेस के कम्पोज की असुविधा के कारण (यथा सङ्ग्रह का संग्रह) द्वित्वादिनिर्देश, भिन्नस्तरीय अक्षर-मात्रा-चिन्हों का योजन, मानव सुलभ असावधानी के कारण स्वर-व्यञ्जन-मात्रा-लेखन-व्यत्यास होना यत्र तत्र यत् किञ्चित् संभव है, उसे पाठकों को सुधार लेना चाहिए।

अन्त्य में मैं इस भाग के समाप्ति में प्रकाशित श्लोकों के भाव की ओर ध्यान आकृष्ट कराता हुआ भारत की गौरव प्राप्त संस्था श्रीवैद्यनाथ आयुर्वेद भवन के संस्थापक एवं अध्यक्ष पं० रामनारायण वैद्य जी का अधिक आभार मानता हूँ, जिनके उत्साह से यह सेवा मुझ से बन सकी।

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, कर्मकाण्डात् सदा हितात्॥

इति शुभम्।

विद्यानिलयः
३२।१७ ब्रह्मनाल
वाराणसी १.

निवेदक, भवदीय—
श्रीगोपालचन्द्र मिश्र

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

माध्यन्दिनीये कर्मकाण्डमन्त्रसंग्रहे सामान्याध्यायात्मक-प्रथमभागस्य
मन्त्र-संहितास्थलनिर्देशादिसहिता

विनियोगसूची

कर्मनाम	संग्रहस्य मंत्रसंख्या	मन्त्रः			संग्रहस्य पृष्ठसंख्या
पवित्रधारणम्	१	पवित्रेस्थो	{ १ / ४	१२ / ४	१
स्वस्तिवाचनम्	२	आनोभद्राः	२५	१४	२
२-१३ [१२]	३	देवानां भद्रा	२५	१५	२
	४	तान् पूर्वया	२५	१६	३
	५	तन्नो वातो	२५	१७	३
	६	तमीशानम्	२५	१८	३
	७	स्वस्ति नः	२५	१९	४
	८	पृषदश्वा	२५	२०	४
	९	भद्रं कर्णेभिः	२५	२१	५
	१०	शतमिन्नु शरदः	२५	२२	५
	११	अदितिर्द्यौः	२५	२३	५
	१२	द्यौः शान्तिः	३६	१७	६
	१३	यतोयतः	३६	२२	६

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

म० सं०	कर्मनाम	संग्रहस्थ—मंत्रसंख्या	मन्त्रः	संहितायाः अ०	संहितायाः म०	संग्रहस्य पृष्ठसंख्या	प्र० भा०
।१०।	गणपतिपूजनम्	१४	गणानान्त्वा	२३	१९	७	
	गौरीपूजनम्	१५	अम्बेऽअम्बिके	२३	१८	७	
	विष्णुपूजनम्	१६	इदं विष्णुः	५	१५	८	
	शिवपूजनम्	१७	नमः शम्भवाय	१६	४१	८	
	प्रतिष्ठा	१८	मनो जूतिः	२	१३	८	
	आसनम्	१९	अदित्यै व्युन्दनम्	२	२	९	
	पाद्यम्	२०	त्रीणि पदा	३४	४३	९	
	अर्घ्यम्	२१	धामन्ते	१७	९९	१०	
	आचमनीयम्	२२	इमम्मे वरुण	२१	१	१०	
	स्नानम्	२३	द्रुपदादिव	२०	२०	१०	
	पयःस्नानम्	२४	पयः पृथिव्याम्	१८	३६	११	
	दधिस्नानम्	२५	दधिक्राव्णः	२३	३२	११	
	घृतस्नानम्	२६	घृतम्मिमिक्षे	१७	८८	१२	
	मधुस्नानम [३]	२७	मधुव्वाताः	१३	२७	१२	
		२८	मधु नक्तम्	१३	२८	१३	।१०।
		२९	मधुमान्नः	१३	२९	१३	
	शर्करास्नानम्	३०	अपांश्रसम्	९	३	१३	

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

कर्मनाम	मंत्रसंख्या	मन्त्राः	संहितायाः अ०	म०	संग्रहस्य पृष्ठसंख्या
पञ्चामृतस्नानम्	३१	पञ्च नद्यः	३४	११	१५
शुद्धोदकस्नानम्	३२	शुद्धवालः सर्व	२४	३	१४
वस्त्रम्	३३	सुजातो ज्योतिषा	११	४०	१५
यज्ञोपवीतम्	३४	यज्ञो देवानाम्	८	४	१५
गन्धः	३५	त्वाङ्गन्धर्वाः	१२	९८	१६
अक्षताः	३६	अक्षन्नमीमदन्त	३	५१	१६
पुष्पम्	३७	ओषधीः प्रति	१२	७७	१७
दूर्वाः	३८	काण्डात् काण्डात्	१३	२०	१७
बिल्वपत्रम्	३९	नमो बिल्मिने	१६	३५	१७
तुलसीदलम्	४०	शिवो भव	११	४५	१८
परिमलद्रव्याणि	४१	अहिरिव भोगैः	२९	५१	१८
सिन्दूरम्	४२	सिन्धोरिव	१७	९५	१९
धूपः	४३	धूरसि धूर्व	१	८	१९
दीपः	४४	अग्निर्ज्योतिः	३	९	२०
नैवेद्यम्	४५	अन्नपतेन्नस्य	११	८३	२१
करोद्वर्तनम्	४६	अंशुनाते	२०	२७	२१
ताम्बूलम्	४७	याः फलिनीर्या	१२	८९	२१

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मंनाम	संग्रहस्थ—मंत्रसंख्या	मन्त्रः	संहितायाः अ०	म०	संग्रहस्य पृष्ठसंख्या
दक्षिणा	४८	हिरण्यगर्भःसम्	२५	१०	२२
आरार्तिक्यम्	४९	इदꣳहविः	१६	४८	२२
	५०	आरात्रिपार्थिवꣳ.	३४	३२	२३
प्रदक्षिणा	५१	ये तीर्थानि	१६	६१	२३
पुष्पाञ्जलिः	५२	यज्ञेनयज्ञम्	३१	१६	२४
	५३	राजाधिराजाय			२४
	५४	स्वस्तिसाम्राज्यम्			२४
	५५	विश्वतश्चक्षुः	१७	१९	२६
* आवाहनम्, ध्यानं वा	५६	सहस्रशीर्षा	३१	१	२७
आसनम्	५७	पुरुषऽएवेदम्	३१	२	२७
पाद्यम्	५८	एतावानस्य	३१	३	२७
अर्घ्यम्	५९	त्रिपादूर्ध्वः	३१	४	२८
आचमनीयम्	६०	ततो ऽविराड	३१	५	२८
स्नानम्	६१	तस्माद्यज्ञात्सर्व	३१	६	२९
वस्त्रम्	६२	तस्माद्यज्ञात्०ऋचः	३१	७	२९

* पौरुषाध्यायस्य ५६–७७ [२२] ब्रह्मार्पणे (भोजने) विनियोगः । पौरुषानुवाकस्य (= पुरुषसूक्तस्य) ५६–७१ [१६] विष्णुपूजने सर्वदेवपूजने विष्णुयज्ञस्वाहाकारे च विनियोगः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कर्मनाम	मन्त्र संख्या	मन्त्रः	अ०	म०	पृष्ठसंख्या
यज्ञोपवीतम्	६३	तस्मादश्वा	३१	८	२९
गन्धः	६४	तं यज्ञम्	३१	९	३०
पुष्पम्	६५	यत्पुरुषम्	३१	१०	३०
धूपः	६६	ब्राह्मणोऽस्य	३१	११	३०
दीपः	६७	चन्द्रमा मनसो	३१	१२	३१
नैवेद्यम्	६८	नाभ्याऽआसीत्	३१	१३	३१
ताम्बूलम्	६९	यत्पुरुषेण	३१	१४	३२
प्रदक्षिणा	७०	सप्तास्यासन्	३१	१५	३२
पुष्पाञ्जलिः	७१	यज्ञेन यज्ञम्	३१	१६	३२
	७२	अद्भ्यः सम्भृतः	३१	१७	३३
	७३	वेदाहमेतं	३१	१८	३३
	७४	प्रजापतिश्चरति	३१	१९	३४
	७५	यो देवेभ्यः	३१	२०	३४
	७६	रुचम्ब्राह्मम्	३१	२१	३४
	७७	श्रीश्च ते	३१	२२	३५
† आवाहनम्, ध्यानं वा	७८	नमस्ते रुद्र	१६	१	३५
आसनम्	७९	या ते रुद्र	१६	२	३६

† रुद्रानुवाकस्य ७८-९३ [१६] शिवपूजायां, रुद्रयज्ञस्वाहाकारे च विनियोगः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कर्मनाम	संग्रहस्थ—मंत्रसंख्या	मन्त्रः	संहितायाः अ०	संहितायाः म०	संग्रहस्य पृष्ठसंख्या
पाद्यम्	८०	यामिषुम्	१६	३	३६
अर्घ्यम्	८१	शिवेनवचसा	१६	४	३६
आचमनीयम्	८२	अद्ध्यवोचदधि	१६	५	३७
स्नानम्	८३	असौयस्ताम्रो	१६	६	३७
वस्त्रम्	८४	असौयोवसर्पति	१६	७	३७
यज्ञोपवीतम्	८५	नमोस्तु नील	१६	८	३८
गन्धः	८६	प्र मुञ्च	१६	९	३८
पुष्पम्	८७	विज्यन्धनुः	१६	१०	३८
धूपः	८८	या ते हेतिः	१६	११	३९
दीपः	८९	परि ते धन्वनो	१६	१२	३९
नैवेद्यम्	९०	अवतत्य धनुः	१६	१३	३९
ताम्बूलम्	९१	नमस्तऽआयु	१६	१४	४०
प्रदक्षिणा	९२	मा नो महान्त	१६	१५	४०
पुष्पाञ्जलिः	९३	मा नस्तोके	१६	१६	४०
सूर्यपूजनम्	९४	आ कृष्णेन	३३	४३	४१
चन्द्रमःपूजनम्	९५	इमं देवा	१०	१८	४२
मङ्गलपूजनम्	९६	अग्निर्मूर्द्धा	३	१२	४२

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कर्मनाम	संग्रहस्थ—मंत्रसंख्या	मन्त्रः	संहितायाः अ०	म०	संग्रहस्य पृष्ठसंख्या
बुधपूजनम्	९७	उद्बुध्यस्व	१५	५४	४३
बृहस्पतिपूजनम्	९८	बृहस्पते परि	२६	३	४३
शुक्रपूजनम्	९९	अन्नात्परि	१९	७५	४४
शनिपूजनम्	१००	शन्नो देवी	३६	१२	४४
राहुपूजनम्	१०१	कया नः	३६	४	४५
केतुपूजनम्	१०२	केतुङ्कृण्वम्	२९	३७	४५
तिलकम्	१०३	युञ्जन्ति ब्रध्न	२३	५	४५
,,	१०४	युञ्जन्त्यस्य	२३	६	४६
वरणम्	१०५	व्रतेन दीक्षा	१९	३०	४६
रक्षाबन्धनम्	१०६	यदाबध्नन्दाक्षा	३४	५२	४६
आशीर्वादः	१०७	दीर्घायुस्त	१२	१००	४७
,,	१०८	पुनस्त्वा	१२	४४	४७
* श्रीसूक्तम् [१६]	१०९—१२४	हिरण्यवर्णां	ऋग्वेदपञ्चममण्डलान्ते परिशिष्टम्		
आवाहनम् ध्यानं वा	१०९	हिरण्यवर्णां हरिणीं			४८
आसनम्	११०	तां म आ वह			४९
पाद्यम्	१११	अश्वपूर्वांरथमध्यां			४९

* श्रीसूक्तस्य १०९- १२४ [१६] देवीपूजायां, लक्ष्मीयज्ञस्वाहाकारे च विनियोगः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कर्मनाम	संग्रहस्थ— मंत्रसंख्या	मन्त्रः	संग्रहस्य पृष्ठसंख्या
अर्घ्यम्	११२	कां सोस्मितां	४
आचमनीयम्	११३	चन्द्रां प्रभासां	४६
स्नानम्	११४	आदित्यवर्णे	४९
वस्त्रम्	११५	उपैतु मां	४६
अलङ्करणम्	११६	क्षुत्पिपासामलां	५०
गन्धः	११७	गन्धद्वारां	५०
पुष्पम्	११८	मनसःकाम	५०
धूपः	११९	कर्दमेन प्रजा	५०
दीपः	१२०	आपः स्रजन्तु	५०
नैवेद्यम्	१२१	आर्द्रां पुष्करिणीं	५०
ताम्बूलं, प्रदक्षिणा च	१२२	आर्द्रां यः करिणीं	५१
पुष्पाञ्जलिः	१२३	तां म आवह	५१
जपः	१२४	यः शुचिः प्रयतो	५१

सूचीयं विनियोगानां मन्त्र— तत्स्थलदर्शिका ।
अदृष्टपूर्वा नूत्नाद्या सन्तोषाय विदां भवेत् ॥

—श्रीगोपालचन्द्रमिश्रः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

याज्ञिकाचार्यश्रीगोपालचन्द्रमिश्रसंगृहीतः,

माध्यन्दिनीयकर्मकाण्ड–मन्त्रसंग्रहः ।

प्रथमो भागः

हरिःॐ पवित्रेस्त्थः । पवित्रेस्त्थोव्वैष्णव्व्यौ
सवितुर्व्वः प्प्रसवऽउत्त्पुनाम्म्यच्छिद्रेण पवित्रे-
णसूर्य्यस्यरश्मिभिः ॥ तस्स्यंतेपवित्रपते-
पवित्रपूतस्स्ययत्त्कांमःपुनेतच्छकेयम् ॥१॥

[१] पवित्रधारणमन्त्रः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

म० संं० ॥२॥ आनं॑ः । आनो॑भ॒द्राः॒क्रत॑वो यन्तु वि॒श्वतो॒ऽद॑-
ब्धासो॒ऽअप॑रीतास॒ऽउ॒द्भिदः॑ ॥ दे॒वा नो॒ यथ॒-
थासद॒मिद्वृ॒धे ऽअस॒न्नप्रा॑युवोर॒क्षि॒तारो॑दि॒वे
दि॑वे ।२। दे॒वानां॒म्भ॒द्रा । दे॒वानां॑म्भ॒द्रासु॒म॒ति-
र्ऋ॑जूय॒तान्दे॒वाना॑ꣳ रा॒तिर॒भि नो॒ निव॑र्त्तताम् ॥
दे॒वाना॑ꣳ स॒ख्यमु॒प॑सेदि॒मा व॒यन्दे॒वा न॒ऽआ-
यु॒ः प्रति॑रन्तु जी॒वसे॑ ॥३॥ तान्पूर्व्व॑या । तान्पू- ॥२॥

[१-१३] स्वस्तिवाचनमन्त्राः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

व्वंयानिविदांहूमहेव्वयम्भगंम्मित्रमादितिन्द- प्र०
म० क्षंमस्स्रिधंम् ॥ अर्य्यमणंव्वरुणꣳसोमंमश्श्वि- भा०
सं० नासरंस्वतीनःसुभगामयंस्करत् ॥४॥ तन्नंः ।
॥३॥ तन्नोव्वातोंमयोभुव्वातुभेषजन्तन्मातापृंथि-
वीतत्पितादद्यौः ॥ तद्ग्रावांणःसोमसुतोंम-
योभुवस्त्तदंश्श्विनाशृणुतन्धिष्ण्यायुवम् ।५।
तमीशांनम् । तमीशांनञ्जगंतस्तस्थुषस्प-
तिंन्धियञ्जिन्वमवंसेहूमहेव्वयम् ॥ पूषानो- ॥३॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

म० सथाब्वेदंसामसंदूद्वृधेरंक्षितापायुरदंब्धहं अ०॥
सं० स्वस्तयें ॥६॥ स्वस्तिनः । स्वस्तिनऽइन्द्रो- भा०
॥४॥ वृद्धश्रंवाहस्वस्तिनंःपूषाविश्ववेदाहं ॥
स्वस्तिनस्ताक्ष्यौऽअरिष्टनेमिहस्वस्ति-
नोबृहस्पतिर्दधातु ॥७॥ पृषंदश्वामरुतंः।
पृषंदश्वामरुतहपृश्निमातरहशुभंय्यावानो -
विदथेषुजग्गमंयह॥अग्गिनाजिह्वामनंवहंसूरं-
चक्षसोविश्वेनोदेवाऽअवसागंमन्निह ॥८॥ ॥४॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भद्रङ्कर्णेभिः । भद्रङ्कर्णेभिःशृणुयामदेवा
भद्रम्पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ॥ स्थिरैरङ्गैस्तु
ष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहिदेवहितंयदा
युः ॥९॥ शतमिन्नु । शतमिन्नुशरदोऽअन्ति
देवायत्रानश्चक्राजरसन्तनूनाम् ॥ पुत्रासो-
यत्रपितरोभवन्तिमानोमद्ध्यारीरिषतायुर्ग
न्तोः ॥१०॥ अदितिर्द्यौः । अदितिर्द्यौरदि
तिरन्तरिक्षमदितिर्मातासपितासपुत्रः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

म० सं० ॥६॥

विश्वेदेवाऽअदितिः पञ्चजनाऽअदितिर्ज्जा-
तमदितिर्ज्जनित्वम्॥ ११॥द्यौः शान्तिः । द्यौः
शान्तिरन्तरिक्षᳬ शान्तिः पृथिवीशान्ति-
रापः शान्तिरोषधयः शान्तिः ॥ वनस्पतयः
शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्वᳬ
शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सामाशान्तिरेधि
॥ १२ ॥ यतोयतः । यतोयतः समीहसेततो
नोऽअभयङ्कुरु॥ शन्नः कुरुप्रजाभ्योभयन्नः

प्र० भा० ॥६॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

म० सं० ॥७॥ पशुभ्यं÷॥१३॥ गणानांन्त्वा । गणानांन्त्वा प्र० भा०
गणपंतिᳬहवामहेप्प्रियाणांन्त्वाप्प्रियपंतिᳬ
हवामहेनिधीनान्त्वांनिधिपतिंᳬहवामहेव्व-
सोमम ॥ आहमंजानिगर्ब्भधमात्त्वमंजा-
सिगर्ब्भधम् ॥ १४ ॥ अम्बेऽअम्बिके ।
अम्बेऽअम्बिकेम्बांलिकेनमांनयातिकश्चन ॥
ससंस्त्यश्श्वकः सुभांद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम् ॥७॥

[१४] गणपतिमन्त्रः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ १५ ॥ इदंविष्णुः । इदंविष्णुर्विचक्र-
मेत्त्रेधानिदंधेपदम् ॥ समूढमस्स्यपाᳪसुरे-
॥ १६ ॥ नमः शम्भवाय । नमः शम्भवा-
यंचमयोभवायचनमः शङ्करायचमयस्क-
रायचनमः शिवायचाशिवतरायच ॥ १७ ॥
मनोजूतिः । मनोजूतिर्जुषतामाज्ज्यस्यबृह-
स्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्टंय्यज्ञᳪसमि-

[१५] गौरीमन्त्रः । [१६] विष्णुमन्त्रः । [१७] शिवमन्त्रः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मन्दंधातु॥ विश्वेदेवासऽइहमादयन्तामो३म् - प्र०
म० स० ॥१॥ म्प्रतिष्ठ ॥ १८ ॥ अदित्यैव्व्युन्दनम् । अ- भा०
दित्यैव्व्युन्दनमसिविष्णोस्तुपोस्स्यूर्ण-
म्म्रदसन्त्वास्तृणामिस्स्वासस्थान्देवेभ्यो-
भुवपतयेस्स्वाहाभुवनपतयेस्स्वाहाभूता-
नाम्म्पतयेस्स्वाहा॥१९॥ त्रीणिपदा। त्रीणि-
पदाविचक्रमेविष्णुर्गोपाऽअदाभ्यः । ॥१॥

पं० प्रेम दत्त शास्त्री

[१८] प्रतिष्ठामन्त्रः । [१९] आसनमन्त्रः ।

जहांगीराबाद २०२३६४
बुलन्दशहर (उ०प्र०)
CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अतोधर्म्माणिधारयन् ॥२०॥ धामन्ते। धा-
मन्तेव्विश्वम्भुवनमाधिश्रितमन्तः समु-
द्रेहृद्यन्तरायुषि । अपामनीकेसमिथेयऽ
आभृतस्तमश्याममधुमन्तन्तऽऊर्म्मिम्
॥२१॥ इमम्मे। इमम्मेव्वरुणश्रुधीहवम-
द्याचमृडय । त्वामवस्युराचके ॥२२॥
द्रुपदादिवमुमुचानः । द्रुपदादिवमुमुचानः

[२०] पाद्यमन्त्रः। [२१] अर्घमन्त्रः। [२२] आचमनमन्त्रः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्स्विन्नश्स्स्नातोमलादिव ॥ पूतम्पवित्त्रेणे-
वाज्ज्यमापः शुन्धन्तुमैनसः ॥२३॥ पयः
पृथिव्व्याम्। पयः पृथिव्व्याम्पयऽओषधी-
षुपयोदिव्व्युन्तरिक्षेपयोधाः॥ पयस्स्वतीः
प्प्रदिशःसन्तुमह्यम् ॥ २४ ॥ दधिक्का-
व्वणोऽअकारिषम्। दधिक्काव्वणोऽअकारिष-
ञ्जिष्णोरश्श्वस्यव्वाजिनः ॥ सुरभिनोमु-

[२३] स्नानमन्त्रः। [२४] दुग्धस्नानमन्त्रः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

म० खांकरत्त्प्रणऽआयुं ॐ षितारिषत् ॥ २५ ॥ प्र०
सं० घृताग्मिमिक्षे । घृताग्मिमिक्क्षेघृतमंस्स्ययो- भा०
।१२। र्न्नि र्घृतेऽश्रितो घृतम्म्वस्स्यधाम ॥ अनुष्वध-
मावहमादंयस्स्वस्स्वाहांकृतंव्वृषभव्वाक्षि-
हव्व्यम् ॥ २६ ॥ मधुव्वाताः । मधुव्वाता-
ऽऋतायतेमधुंक्क्षरन्तिसिन्धवः ॥ माद्ध्-
र्व्वीर्न्नःसन्त्वोषधीः ॥ २७ ॥ मधुनक्क्तम् । ।१२।

---

[२५] दधिस्नानमन्त्रः । [२६] घृतस्नानमन्त्रः । [२७-२९] मधुस्नानमन्त्रः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

म० मधुनक्तमुतोषसोमधुमत्पार्थिवꣳरजः ॥ प्र०
सं० मधुद्यौरस्तुनः पिता ॥ २८ ॥ मधु- भा०
।१३। मान्नः । मधुमान्नोवनस्पतिर्मधुमाँ२ ॥
ऽअस्तुसूर्य्यः ॥ माध्वीर्गावोभव-
न्तुनः ॥ २९ ॥ अपाꣳरसम् । अपाꣳ
रसमुद्वयसꣳसूर्य्येसन्तꣳसमाहितम् । अ-
।६८। पाꣳरसस्ययोरसस्तंवोगृह्णाम्युत्तममु-
पयामगृहीतोसीन्द्रायत्वाजुष्टङ्गृह्णाम्यु- ।११।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

षतेयोनिरिन्द्रायत्वाजुष्टतमम् ॥ ३० ॥
पञ्चनद्यः सरस्वतीमापियन्तिसस्रोतसः ॥
सरस्वतीतुपञ्चधासोदेशेभवत्सरित् ॥३१॥
शुद्धवालः सर्वशुद्धवालः। शुद्धवालः सर्व-
शुद्धवालोमणिवालस्तऽआश्विनाःश्येत-
श्येताक्षोरुणस्तेरुद्रायपशुपतयेकर्णा-
यामाऽअवलिप्तारौद्रानभोरूपाः पार्ज्ज-

[३०] शर्करास्नानमन्त्रः।   [३१] पञ्चामृतस्नानमन्त्रः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

म० सं० ।१५। न्याः ॥३२॥ सुजातोज्ज्योतिषा । सुजा- प्र० भा०
तोज्ज्योतिषासहशर्म्मव्वरूथमासदत्स्वः ।
व्वासोऽअग्नेविश्वरूपᳬं संव्ययस्व-
विभावसो ॥ ३३ ॥ सञ्ज्ञोदेवानाम् ।
सञ्ज्ञोदेवानाम्मप्रत्यैतिसुम्ननमादित्यासो-
भवंतामृडयन्तः ॥ आवोर्व्वाचीसुमतिर्व्वं-
वृत्त्यादᳬंहोश्चिद्याव्वरिवोवित्तरासदा- ।१५।

[३२] शुद्धोदकस्नानमन्त्रः । [३३] वस्त्रमन्त्रः ।

पं० प्रेम दत्त शास्त्री
जहांगीराबाद २०२३६४
बुलन्दशहर (उ०प्र०)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दित्त्येब्भ्यस्त्वा ॥ ३४ ॥ त्वाङ्गन्धर्वाऽ ।
त्वाङ्गन्धर्वाऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृह-
स्पतिः ॥ त्वामोषधे सोमो राजा विद्वा-
न्यक्ष्मादमुच्च्यत ॥ ३५ ॥ अक्षन्नमी-
मीमदन्त । अक्षन्नमीमदन्तह्यवप्प्रिया-
ऽअधूषत ॥ अस्तोषतस्वभानवोविप्प्रान-
विष्ठयामतीयोजान्विन्द्रतेहरी ॥ ३६ ॥

[३४] यज्ञोपवीतमन्त्रः । [३५] गन्धमन्त्रः । [३६] अक्षतमन्त्रः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

म० सं० १९७। ओषधीः प्प्रति। ओषधीः प्प्रतिमोदद्ध्व- प्र० भा०
म्पुष्प्पवतीः प्प्रसूवरीः॥ अश्श्वाऽइव सजि-
त्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्ण्णवः॥३७॥ काण्ण्डा-
त्त्काण्ण्डात्त्प्ररोहन्न्ती। काण्ण्डात्त्काण्ण्डात्त्प्र-
रोहन्न्तीपरुषः परुषस्प्परि॥ एवानोदूर्व्वेप्प्रत-
नुसहस्स्रेणशतेनच॥३८॥ नमोबिल्म्मने।
नमोबिल्म्मनेचकवचिनेचनमोव्वर्म्मिणे

[३७] पुष्प-माला-मन्त्रः। [३८] दूर्वामन्त्रः। १९७।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चव्वरूथिनेचनमः॑ श्रुतायंचश्रुतसेनायं
चनमोदुन्दुब्भ्यायचाहनन्न्यायच ॥ ३९ ॥
शिवोभव । शिवोभवप्रजाब्भ्योमानुषी-
ब्भ्यस्त्वमङ्गिरः ॥ माद्यावापृथिवीऽअ-
भिशोचीर्म्मान्तरिक्षम्माव्वनस्पतीन् ॥४०॥
अहिंरिवभोगैः । अहिंरिवभोगैः पर्य्येतिबा-
हुञ्ज्यायाहेतिम्परिबाधमानः ॥ हस्तग्घ्नोव्वि-

[३९] बिल्वपत्रमन्त्रः । [४०] तुलसीमन्त्रः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्वांश्च युनानि व्विद्वान्न्पुमान्न्पुमांᳬसम्परि-
पातु व्विश्वतः ॥४१॥ सिन्धोरिवप्राद्ध्वने ।
सिन्धोरिवप्राद्ध्वने शूघनासो व्वातप्रमियᳬ
पतयन्ति यह्वाः ॥ घृतस्य धाराऽ अरुषोन
व्वाजी काष्ठाभिन्दन्नूर्मिभिः पिन्न्वं-
मानः ॥४२॥ धूरसि । धूर्व धूर्वन्त-
न्धूर्वतं योऽस्मान्धूर्वति तन्धूर्वयं व्वयन्धू-

[४१] नानापरिमलद्रव्यमन्त्रः । [४२] सिन्दूरमन्त्रः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

म० सं० ।२०। व्वा॑मः ॥ दे॒वाना॑मसि॒व्वह्नि॑तम॒ᳪ सस्नि॑तम॒- म१

म्पप्रि॑तम॒ञ्जुष्ट॑तमन्दे॒वहू॑तमम् ॥ ४३ ॥ भा०

अ॒ग्निर्ज्ज्योति॑ः । अ॒ग्निर्ज्ज्योति॒र्ज्ज्योति॑र॒-

ग्निः स्वाहा॒सूर्य्यो॒ज्ज्योति॒र्ज्ज्योति॒ᳪ सूर्य्य॒ᳪ

स्वाहा॑ ॥ अ॒ग्निर्व्वर्च्चो॒ज्ज्योति॒र्व्व-

र्च्च॒ᳪ स्वाहा॒सूर्य्यो॒व्वर्च्चो॒ज्ज्योति॒र्व्वर्च्च॒ᳪ

स्वाहा॑ ॥ ज्योति॒ᳪ सूर्य्य॒ᳪ सूर्य्यो॒ज्ज्योति॒ᳪ

---

[४३] धूपमन्त्रः । ।२०।

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.
CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्स्वाहा ॥४४॥ अन्नपतेन्न्नस्य । अन्नपतेन्न्न-
स्स्यनोदेह्यनमीवस्स्यशुष्मिणः । प्रप्प्र-
दातारन्तारिषऽऊर्ज्जन्नोधेहिद्द्विपदेचतु-
ष्प्पदे ॥ ४५ ॥ अङ्शुनाते । अङ्शुनाते
अङ्शुःपृच्यताम्परुषापरुः ॥ गन्धस्ते-
सोममवतुमदायरसोऽअच्च्युतः ॥ ४६ ॥
याःफलिनीः । याःफलिनीर्य्याऽअफलाऽ-

[४४] दीपकमन्त्रः । [४५] नैवेद्यमन्त्रः । [४६] करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनमन्त्रः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

म० सं० १२२। अंपुष्प्पायाश्चंऽपुष्प्पणीः ॥ बृहस्प्पति- म० भा०
प्प्रसूतास्त्तानोमुञ्चन्त्वᳪहंसः ॥ ४७ ॥
हिरण्ण्यगर्ब्भश्समम्। हिरण्ण्यगर्ब्भश्समवर्त्त-
ताग्ग्रेभूतस्य्यंजातः पतिरेकंऽआसीत् ॥
सदाधारपृथिवीन्द्यामुतेमाङ्कस्स्मैदेवायंह-
विषाविधेम ॥ ४८ ॥ इदᳪहविः ।
इदᳪहविः प्प्रजननंम्मेऽअस्त्तुदशवीरᳪ १३२।

---

[४७] ताम्बूलमन्त्रः। [४८] दक्षिणामन्त्रः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सर्व्वँगणꣳस्वस्तय ॥ आत्क्मसानिंप्प्रजा- प्र०
म० सं० ।२३। सानिंपशुसानिंलोकसन्न्यंभयसानिं ॥ अग्निः भा०
प्प्रजाम्बंहुलाम्मेंकरोत्त्वन्न्नम्पयोरेतोंऽ-
अस्म्मासुंधत्त ॥ ४९ ॥ आरांत्रि ।
आरांत्त्रिपार्त्थिवꣳरजंः पितुरंप्प्रायिधा-
मांभिः ॥ दिवः सदांꣳसिबृहतीव्वितिंष्ठसऽ-
आत्त्वेषंव्वंर्त्ततेतमंः ॥ ५० ॥ येतीर्त्थानिं ।

पं० प्रेम दत्त शास्त्री
जहांगीराबाद २०२३६४
बुलन्दशहर (उ०प्र०)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सेतीर्त्थानिंप्प्रचरंन्तिसृकाहंस्तानिषङ्गि-
णंः । तेषांᳪसहस्रयोजनेवधन्न्वांनि-
तन्मासि ॥ ५१ ॥ ॐ ३ यज्ञेन यज्ञ-
मयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमा-
न्न्यासन् ॥ ते ह नाकम्महिमानः सचन्त
यत्र पूर्वे साद्ध्याः सन्ति देवाः ॥ ५२ ॥
ॐ ३ राजाधिराजाय प्प्रसह्यसाहिने, नमो

[५१]प्रदक्षिणामन्त्रः । [५२-५५]बृहत्पुष्पाञ्जलिमन्त्राः माध्यन्दिनीयवेदधर्मेण न पठ्यन्ते इति स्वराभावः कृतः । 'यज्ञन यज्ञम्' इत्येकस्य प्रयोगे तु स्वराः, ते ७१ मन्त्रे द्रष्टव्याः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वयं वैश्रवणाय कुर्महे। स मे कामान्कामका-
माय मह्यं, कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु। कुबे-
रायवैश्रवणाय, महाराजाय नमः॥ ५३ ॥
ॐ ३ स्वस्ति, साम्राज्यं भौज्यं, स्वा-
राज्यं वैराज्यं, पारमेष्ठ्यं राज्यं, महा-
राज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात्,
सार्वभौमः सार्वायुष आन्तादापरार्धात्;
पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति, तद-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्येष श्लोकोऽभिगीतो, मरुतः परिवेष्टारो,
मरुत्तस्यावसन्गृहे। आवीक्षितस्य काम-
प्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति ॥ ५४ ॥

ॐ ३ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो
विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात् ॥ सम्बा-
हुभ्यान्धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जन-
यन्देवऽ एकः ॥ ५५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सहस्रशीर्षापुरुषः । सहस्रशीर्षापुरुषꣳ
सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥ सभूमिꣳसर्व्व-
तंस्पृत्त्वात्त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ ५६ ॥ पुरु-
षऽएव । पुरुषऽएवेदꣳसर्व्वँय्यद्भूतँय्यच्च
भाव्व्यम् ॥ उतामृतत्त्वस्येशानोयदन्ने-
नातिरोहति ॥ ५७ ॥ एतावानस्य ।

[५६–७१] पौरुषानुवाक (पुरुषसूक्त) मन्त्राः १६, एतेषां विष्णुपूजने देवपूजने विष्णुयज्ञस्वाहाकारे ब्रह्मार्पणे (भोजने) अपि प्रयोगः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

म० सं० ।२८।

एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः ॥ पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥ ५८ ॥ त्रिपादूर्ध्व । त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः ॥ ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि ॥ ५९ ॥ ततो विराट् । ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः ॥ स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पुरः ॥ ६० ॥ तस्माद्यज्ञात् । तस्माद्य-
ज्ज्ञात्सर्व्वँहुतꣳसम्भृतम्पृषदाज्ज्यम् ॥ पशूँ-
स्ताँश्च्चक्रे वायव्यानारण्याग्ग्राम्म्याश्चये
॥ ६१ ॥ तस्माद्यज्ज्ञात् । तस्माद्यज्ज्ञा-
त्सर्व्वँहुतऽऋचꣳसामानिजज्ज्ञिरे ॥ छन्दाँ-
ꣳसिजज्ज्ञिरेतस्म्माद्यजुस्तस्म्मादजायत
॥ ६२ ॥ तस्मादश्वाः । तस्मादश्वाऽ-
अजायन्तयेकेचोभयादतꣳ ॥ गावोहज- ।२९।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

म० ज्ज्ञिरेतस्म्मात्तस्म्माञ्जाताऽअजावयः प्र०
सं० ॥ ६३ ॥ तंयज्ञम् । तंय्यज्ञम्बर्हिषि- भा०
।३०। प्प्रौक्षन्न्पुरुषञ्जातमग्ग्रतः ॥ तेनदेवा-
ऽअयजन्तसाद्ध्याऽऋषयश्चये ॥ ६४ ॥
यत्पुरुषम् । यत्पुरुषंव्व्यदधुः कति-
धाव्व्यकल्प्पयन् ॥ मुखङ्किमस्यासीत्त्किं-
म्बाहूकिमूरूपादाऽउच्च्येते ॥ ६५ ॥
ब्ब्राह्मणोस्य । ब्राह्मणोस्यमुखमासीद्द्बा- ।३०।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हूराजन्न्यः कृतः ॥ उरूतदस्य यद्वै-
म० श्श्यः पद्भ्याᳬशूद्रोऽअजायत ॥ ६६ ॥ प्र०
सं० भा०
।११। चन्द्रमामनसः । चन्द्रमामनसोजातश्च-
क्षोःसूर्य्योऽअजायत॥ श्रोत्राद्वायुश्च-
प्प्राणश्चमुखादग्निरजायत ॥ ६७ ॥ ना-
भ्यांऽआसीत् । नाभ्यांऽआसीदन्तरिक्षः
शीर्ष्णोद्यौःसमवर्त्तत ॥ पद्भ्याम्भू-
मिर्दिशःश्रोत्रात्तथालोकाँ २ ॥ऽ अकल्प- ।३१।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यन् ॥ ६८ ॥ सत्त्पुरुषेण । सत्त्पुरुषेणहविषां
देवासुज्ज्ञमतन्न्वत ॥ व्वसन्तोस्स्यासीदा
ज्ज्यङ्ग्रीष्म्मऽइद्ध्मश्शरद्द्धविः॥६९॥सप्ता
स्स्य। सप्तास्यांसन्न्परिधयस्त्रिःसप्तसमि
धं÷कृताः॥ देवायद्द्यज्ज्ञन्तन्न्वानाऽअ
बद्धनन्न्पुरुषम्पशुम् ॥७० ॥ यज्ज्ञेनयज्ज्ञ
म् । यज्ज्ञेनंयज्ज्ञमयजन्तदेवास्तानिध
म्र्माणिप्प्रथमान्न्यासन्॥ तेहनाकम्महिमा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

न॑÷सचन्त॒यत्र॒पूर्वे॑सा॒द्ध्याः॑सन्ति॑दे॒वाः॥७१॥ प्र॰

म॰ अ॒द्भ्यः सम्भृ॑तः॥ अ॒द्भ्यः॑सम्भृ॑तः पृथि॒- भा॰

सं॰ व्यैरसा॑च्चा वि॒श्वक॑र्म्मण॒ःसम॑वर्त्त॒ताग्ग्रे॑ ॥

।३३। तस्य॒त्त्वष्टा॑ वि॒दध॑द्रू॒पमे॑ति॒तन्मर्त्त्य॑स्य-

दे॒व॒त्त्वमा॒जान॒मग्ग्रे॑ ॥ ७२ ॥ वेदा॒हम्।

व्वेदा॒हमे॒तम्पुरु॑षम्म॒हान्त॑मादि॒त्यव॑र्ण॒न्त-

मसः॑ प॒रस्ता॑त्॥ तमे॒वविदि॒त्त्वाति॑मृ॒त्यु-

[७२-७७] उत्तरनारायणमन्त्राः ६; एतेषां ब्रह्मार्पणे (भोजने) पौरुषानुवाकेन सह प्रयोगः। ।३३।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मैतनान्न्यः पन्थाविद्द्यतेयनाय ॥७३॥
प्रजापतिश्श्चरति । प्रजापतिश्श्चरतिगर्ब्भेऽ-
अन्तरजायमानोबहुधाविजायते ॥ तस्स्यु-
योनिम्परिपश्श्यन्तिधीरास्तस्स्मिन्न्हत-
स्त्थुर्ब्भुवनानिविश्श्वा ॥ ७४ ॥ योदेवे-
ब्भ्यः । योदेवेब्भ्यऽआतपतियोदेवानाम्पु-
रोहितः ॥ पूर्व्वोयोदेवेब्भ्योजातोनमोरुचा-
यब्ब्राह्म्मये ॥७५॥ रुचम्ब्राह्म्मम् । रुच-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

य० म्ब्राह्म्मञ्जनयन्तोदेवाऽअग्ग्रेतदब्ब्रुवन् ॥ य०
सं० यस्त्वैवम्ब्राह्म्मणोव्विद्यात्तस्यदेवाऽअस- भा०
।३५। न्न्वशे ॥७६॥ श्रीश्च्चं । श्रीश्च्चतेलक्ष्मीश्च्च-
पत्क्न्यावहोरात्रेपार्श्वेनक्षत्राणिरूपम-
श्विनौव्व्यात्तम् ॥ इष्णन्निषाणामुम्मऽ
इषाणसर्व्वलोकम्मऽइषाण ॥ ७७ ॥

नमस्त्ते । नमस्त्तेरुद्द्रमन्न्यवऽउतोतऽइषवे- ।१८।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

म० नमः ॥ बाहुब्भ्यामुततेनमः ॥ ७८ ॥ म० ।१६।
सं० याते । यातेरुद्रशिवातनूरघोरापापकाशि- भा०
।२६। नी ॥ तयानस्तन्न्वाशन्तमयागिरिशन्ता-
भिचाकशीहि ॥ ७९ ॥ यामिषुम् । यामि-
षुङ्गिरिशन्तहस्तेबिभर्ष्यस्तवे ॥ शिवा-
ङ्गिरित्रताङ्कुरुमाहिꣳसीःपुरुषञ्जगत् ॥८०॥
।२८। शिवेनव्वचसा । शिवेनव्वचसात्त्वागिरिशा-

[७८-९३] रुद्रपूजानुवाकः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

च्छांव्वदामसि। यथानःसर्व्वमिज्जगदयक्ष्मꣳ-
म० सुमनाऽअसंत्।८१। अद्ध्यंवोचत्। अद्ध्यंवोच भा०
सं० दधिवक्ताप्प्रथमोदैव्व्योभिषक् ॥ अहीँश्च-
।३७। सर्व्वाञ्जम्भयन्त्सर्व्वाश्चयातुधान्न्योधरा-
चीःपरासुव॥८२॥असौयः। असौयस्ताम्म्रो
ऽअरुणऽउतबब्भ्रुःसुमङ्गलः ॥ येचैनꣳ
रुद्द्राऽअभितोदिक्षुश्रिताःसहस्स्रशोवैषा
ꣳहेडऽईमहे॥८३॥असौयः।असौयोवसर्प्प- १३७

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

म० सं० १२८। तिनीलंग्ग्रीवोव्विलोहितः ॥ उतनंङ्गोपाऽअं- ग्र० मा०
दृश्श्रन्नदृंश्श्रन्नुदहाय्र्यः सदृष्ट्वोमृडयाति-
नः ॥ ८४ ॥ नमोस्त्तु । नमास्त्तुनीलंग्ग्रीवाय-
सहस्स्राक्क्षायंमीढुषे ॥ अथोयेऽअंस्स्यस
त्त्वांनोऽहन्तेब्भ्योकरन्नमः ॥८५॥ प्प्रमुञ्च ।
प्प्रमुंञ्चधन्न्वंनस्त्त्वमुभयोरात्क्न्योंज्ज्या-
म् ॥ याश्चतेहस्त्तऽइषंवःपरातांभगवोव्वप
॥८६॥ व्विज्ज्यन्धनुः । व्विज्ज्यन्धनुंःकप- १२८।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

र्द्दिनोविशंल्ल्योबाणंवाँ२॥ऽउत॥८७॥ अनें-
म० सं० शन्नस्स्ययाऽइषंवऽआभुरंस्स्यानिषङ्गधिः म० भा०
१२९। ॥८७॥ याते। यातेंहेतिम्मींढुष्टमहस्त्तेंबभू-
वंतेधनुंः ॥ तयास्म्मान्न्विश्श्वतस्त्वमंय-
क्ष्मयापरिंभुज ॥ ८८ ॥ परिंते । परिंतेध-
न्न्वंनोहेतिरस्स्मान्न्वृंणक्तुविश्श्वतंः॥ अथो
यऽइषुधिस्त्तवारेऽअस्स्मान्निधेंहितम् ॥८९॥
अवतत्त्यधनुंः । अवतत्त्यधनुष्ट्वꣳसहं- १२९।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

म० सं० १४०

स्स्राक्षशतेषुधे ॥ निशीर्य्यशल्ल्यानाम्मु- म० भा० ४
खाशिवोनः÷सुमनाभव ॥ १० ॥ नमस्त्ते ।
नमस्त्तऽआयुधायानाततायधृष्णवे ॥ उभा
भ्यामुततेनमोबाहुभ्यान्तवधन्न्वने ॥ ११ ॥
मानः÷ । मानोमहान्तमुतमानोऽअर्भक-
म्मानऽउक्षन्तमुतमानऽउक्षितम् ॥ मा-
नोवधीः पितरम्मोतमातरम्मानः÷ प्रिया- दी० सं०
स्त्तन्न्वोरुद्ररीरिषः ॥ १२ ॥ मानः÷ । मान- १४०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्तोकेतनयेमानऽआयुषिमानोगोषुमानो-
ऽअश्श्वेषुरीरिषः ॥ मानोव्वीरान्रुद्रभामिनो-
व्वधीर्हविष्मन्तःसदमित्त्वाहवामहे ॥९३॥

आकृष्णेन । आकृष्णेनरजसाव्वर्त्तमानो-
निवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च । हिरण्ययेनस-
वितारथेनादेवोयातिभुवनानिपश्यन् ॥९४॥

[९४-१०२] नवग्रहमन्त्राः । [९४] सूर्यमन्त्रः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इमन्देवाः । इमन्देवाऽअसपत्नꣳसुवद्ध्व-
म्महतेक्षत्त्रायमहतेज्ज्यैष्ठ्यायमहतेजा-
नराज्ज्यायेन्द्रस्स्येन्द्रियाय । इमममुष्य-
पुत्रममुष्यैपुत्त्रमस्स्यैव्विशऽ एषवोमीरा-
जासोमोस्म्माकम्ब्राह्म्मणानाꣳराजा।९५।
अग्निर्म्मूर्द्धा । अग्निर्म्मूर्द्धादिवः ककुत्त्प-
तिः पृथिव्व्याऽ अयम् ॥ अपाꣳ रेताꣳ ४२।

---

[९५] सोममन्त्रः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

म० सं० ।४३। सिजिन्न्वाति ॥९६॥ उद्‌बुद्ध्यस्स्व । उद्- प्र० भा०
द्‌बुद्ध्यस्स्वाग्ग्ने प्प्रतिंजागृहि त्त्वमिष्ट्टापूर्त्ते-
सꣳ सृंजेथामयञ्च । अस्स्मिन्त्सधस्त्थेऽ
अद्ध्युत्त्तरास्स्मिन्निवश्श्वेदेवायजमानश्च्चसी-
दत ॥९७॥ बृहंस्प्पतेऽअति । बृहंस्प्पतेऽ
अतियदर्य्योऽअर्हाद्द्युमद्विभातिक्क्रतु-
मज्ज्नेषु ॥ यद्दीदयच्छवंसऽऋतप्प्रजात- ।४३।

[९६] मङ्गलमन्त्रः । [९७] बुधमन्त्रः । पं० प्रेम ... शास्त्री

जहांगीराबाद २०२३६४
... (उ०प्र०)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

म० तदस्म्मासुद्द्रविंणन्धेहिचित्त्रम् ॥ ९८ ॥ म०
सं० अन्नात्त्परिस्स्रुतः । अन्नात्त्परिस्स्रुतो- भा०
।४४। रसम्ब्ब्रह्म्मणाव्व्यपिबत्त्क्षत्त्रम्पयꣳ सोमं-
म्प्रजापतिꣳ ॥ ऋतेनंसत्त्यमिंन्द्रियव्वि-
पानंꣳ शुक्रमन्धंसऽइन्द्रंस्स्येन्द्रियमिद-
म्पयोमृतम्मधु ॥ ९९ ॥ शन्नः । शन्नोदे-
वीरभिष्टयऽआपोभवन्तुपीतये । शँय्यो- ।४४।

[९८] बृहस्पतिमन्त्रः । [९९] शुक्रमन्त्रः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

म० रभिस्स्त्रंवन्तुनः ॥१००॥ कयांनः । कयां- म०
सं० नश्चित्रऽआभुंवदूतीसदावृंधः सखां ॥ भा०
।४५। कयाशचिष्ठयावृता ॥१०१॥ केतुङ्कृण्वन् ।
केतुङ्कृण्वन्नकेतवेपेशोंमर्य्याऽअपेशसें ।
समुषद्भिरजायथाः ॥ १०२ ॥

।३४। युञ्जन्तिब्ब्रध्नम् । युञ्जन्तिब्ब्रध्नमंरुष- ।४५।

[१००] शनिमन्त्रः । [१०१] राहुमन्त्रः । [१०२] केतुमन्त्रः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्र्वरंन्तम्पारिंतस्त्थुषंः ॥ रोचंन्तेरोचुनादिवि
॥ १०३ ॥ युञ्जन्त्यंस्स्य । युञ्जन्त्यंस्स्यु-
काम्म्याहरीव्विपंक्क्षसारथैं ॥ शोणांधृष्णू
नृवाहंसा ॥ १०४ ॥ व्व्रतेनंदीक्क्षाम् ।
व्व्रतेनंदीक्क्षामांप्नोतिदीक्क्षयांप्नोतिद-
क्क्षिणाम् ॥ दक्क्षिणाश्श्रुद्धामांप्नोतिश्श्र-
द्धयांसत्त्यमांप्प्यते ॥१०५॥ यदांबंद्धन-

[१०३-१०४] तिलकमन्त्रः— [१०५] वरणमन्त्रः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नू । यदाबंध्नन्दाक्षायणा हिरंण्यꣳ श-
तानीकाय सुमनस्यमानाः ॥ तन्मऽआ-
बंध्नामि शतशारदायायुंष्माञ्जरदंष्टि-
र्यथासंम् ॥१०६॥ दीर्घायुंस्त्ते । दीर्घायुंस्त्त
ऽओषधे खनिता यस्म्मै च त्त्वा खनांम्म्यहम् ।
अथो त्त्वन्दीर्घायुंर्भूत्त्वा शतवंल्शा विरोंह-
तात् ॥१०७॥ पुनंस्त्त्वा । पुनंस्त्त्वादित्त्या रु-

[१०६] रक्षाबन्धनमन्त्रः । [१०७-१०८] आशीर्वादमन्त्रौ ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

द्राव्व्वसंवहसामिन्धताम्पुनर्ब्ब्रह्माणोव्वसुनी-
थयज्ञैः ॥ घृतेनत्त्वन्तन्न्वंव्वर्द्धयस्स्वस-
त्त्याः सन्तुयजमानस्यकामाः ॥१०८॥

श्रीसूक्तम्

[१] हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥१०९॥

[१०९-१२४] श्रीसूक्तम् १६ मन्त्राः । लक्ष्मीप्राप्त्यर्थं जप-होमयोः, देवी-पूजायां, श्रीसूक्तमिदमृग्वेदसंहितापरिशिष्टान्तर्गतं माध्यन्दिनीयैरपि प्रयुज्यते । अत्र बहुषु स्थलेषु पाठभेदः उपलभ्यते । स व्यवस्थार्होऽपि नाद्य यावद् व्यवस्थापितो याज्ञिकैः । मम विचारस्तु 'पीयूषे' प्रकाशितो भविष्यति ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

[२] तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
म० यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥११०॥ प्र०

सं० [३] अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम् । भा०
।४९। श्रियं देवीमुप ह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥१११॥

[४] कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम् ॥११२॥

[५] चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मिनीमीं शरणं प्र पद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ॥११३॥

[६] आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः ।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु या अन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥११४॥

[७] उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥११५॥ ।४९।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

म० [८] क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् । प्र०
सं० अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ॥११६॥ भा०
।५०। [९] गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥११७॥
[१०] मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥११८॥
[११] कर्दमेन प्रजा भूता मयि संभव कर्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥११९॥
[१२] आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥१२०॥
[१३] आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् । ।५०।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥१२१॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

[१४] आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥१२२॥

[१५] तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥१२३॥

[१६] यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥१२४॥

ग्रन्थपरिचयः ।

स्वाध्यायेऽधिकृतैर्द्विजैः कलियुगस्योद्भूतदोषोच्चयात् ,
शाखाधीतिरपि प्रमादवशतस्त्यक्ता यतश्चात्मनः ।
स्मृत्या-चार-गृहीतकर्मसु ततो दुःसाध्यतादर्शनात्,
क्लेशावेशवशंवदा बुधवराः सन्तीह खिन्नाः परम् ॥ १ ॥
तेष्वेवान्यतमः प्रशस्तचरितः सद्वैद्यवर्यो द्विजो
गौडो विश्रुतकीर्तिरुन्नतमनाः श्रीरामनारायणः ।

जहांगीराबाद २०२३८४ बुलन्दशहर (उ० प्र०)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्यादावश्यककर्मकाण्डममलं प्रामाणिकं सर्वथे—
त्येवं साधु विचार्य सङ्ग्रहमिमं कर्तुं स यत्नाग्रहीत् ॥ २ ॥
गोपालचन्द्रेण हि तेन विद्वद्विद्यार्थिसन्तोषकरः कृतोऽयम् ।
माध्यन्दिनीयं महनीयकर्म-काण्डं विधातुं किल मन्त्रसङ्ग्रहः ॥३॥

इति याज्ञिकाचार्य-विद्वद्वरेण्य-वेद-धर्मशास्त्र-मीमांसादर्शनाचार्य-
श्रीगोपालचन्द्रमिश्रेण सङ्कलितः माध्यन्दिनीयः
कर्मकाण्डमन्त्रसङ्ग्रहः [प्रथमो भागः
सामान्याध्यायात्मकः] समाप्तः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मुद्रक—
मास्टर प्रिंटिंग वर्क्स
बुलानाड़ा वाराणसी ।

संवत्—२०१९ श्रावणी

प्रथम संस्करण १०००

मूल्य ५० नये पैसे

'सर्वेऽधिकाराः प्रकाशकाधीनाः ।'

पं० प्रेम दत्त शास्त्री
जहांगीराबाद २०२३९४
बुलन्दशहर (उ०प्र०)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इति माध्यन्दिनीयः

कर्मकाण्ड-मन्त्रसङ्ग्रहः

[प्रथमो भागः, सामान्याध्यायः]

प्रकाशक :—पं० श्रीरामनारायणवैद्यः, झाँसी ।

पं० प्रेम दत्त शास्त्री
जहाँगीराबाद २०२३९६
बुलन्दशहर (उ०प्र०)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection